डाक पंजीयन क्रमांक - म.प्र./भोपाल/357/2021-23

मुद्रित पत्र रजि. नं./आर.एन./13063/1967

मध्यप्रदेश सहकारी समाचार

मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ भोपाल का प्रकाशन

Website : www.mpscu.in
E-mail : rajyasanghbpl@yahoo.co.in

हिन्दी/पाक्षिक

प्रकाशन 16 दिसम्बर, 2022, डिस्पेच दिनांक 16 दिसम्बर, 2022

| वर्ष 66 | अंक 14 | भोपाल | 16 दिसम्बर, 2022 | पृष्ठ 8 | एक प्रति 7 रु. | वार्षिक शुल्क 150/- | आजीवन शुल्क 1500/- |

व्यवस्था सुधार का मेरा मिशन जन-सहयोग के बिना सफल नहीं होगा : मुख्यमंत्री श्री चौहान

गरीबों की जिंदगी बदलने का अभियान है मुख्यमंत्री जन-सेवा अभियान

अटल जी के जन्म दिन से शुरू होगा सीएम भू-अधिकार योजना में प्लाट वितरण का कार्य

अच्छा काम करने वाले तीन अधिकारियों को किया सम्मानित

110 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का भूमि-पूजन और लोकार्पण किया

नये हितग्राहियों को दिये योजनाओं के स्वीकृति-पत्र

भोपाल : मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मुख्यमंत्री जन-सेवा अभियान का यह कार्यक्रम गरीबों की जिंदगी बदलने का अभियान है। अभियान में केन्द्र और राज्य सरकार की 38 अलग-अलग योजनाओं में पात्र व्यक्तियों को चिन्हित करने के लिये जन-सेवा शिविर लगा कर 83 लाख नये हितग्राही जोड़े गये हैं। इन सभी को योजनाओं का लाभ मिलना अब शुरू हो जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए और जनता का राज है। मेरा प्रयास है कि जनता को अपने काम के लिए दफ्तरों के चक्कर न लगाना पड़े। उनकी जायज आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी समस्याओं का निराकरण के लिये ही प्रदेश में मुख्यमंत्री जन-सेवा अभियान चलाया गया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान सीधी जिले में मुख्यमंत्री जन-सेवा अभियान में हितग्राहियों को स्वीकृति-पत्र वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने प्रारंभ मे कन्या-पूजन और दीप जला कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने विभिन्न योजनाओं के नवीन हितग्राहियों को स्वीकृति-पत्र वितरित किये। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने 43 करोड़ 88 लाख के विकास कार्यों का भूमि-पूजन और 64 करोड़ 49 लाख के कार्यों का लोकार्पण भी किया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आज मुझे यह बताते हुए खुशी है कि रीवा संभाग में जन-सेवा अभियान में प्राप्त 7 लाख 59 हजार 778 आवेदन में से 7 लाख 2 हज़ार 845 आवेदन स्वीकृत कर अलग-अलग योजनाओं में हितग्राहियों के नाम जोड़ दिए गए हैं। सीधी जिले में भी 1 लाख 37 हज़ार भाई-बहनों के नाम योजनाओं में जोड़े गये। इन सभी हितग्राहियों को आज पूरे रीवा संभाग में स्वीकृति-पत्र वितरित किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्थानीय जन-प्रतिनिधि और कलेक्टर-कमिश्नर यह सुनिश्चित करें कि स्वीकृति-पत्र के लिए किसी हितग्राही को परेशान न होना पड़े।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मेरे लिये तो मेरी जनता ही भगवान है। मैं हमेशा कहता हूँ, भगवान के दर्शन अगर करना है तो दीन-दुखियों की सेवा कर गरीबों के आँखों के आँसू पोछ लो। इनकी आँखों में साक्षात नारायण दिखाई देंगे। मैं पूरे प्रशासन से कहता हूँ कि आपकी ड्यूटी है कि जनता की बेहतर सेवा की जाए। मुख्यमंत्री सहित विधायक, सांसद, कलेक्टर-एसपी और नीचे तक के अधिकारी-कर्मचारी हम सब लोकतंत्र में जनता के सेवक हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मुझे लोग आजकल कह रहे हैं कि आपका मूड कुछ बदला हुआ है। जब काम अच्छा होता है तो मैं प्रशंसा करता हूँ और कहीं गड़बड़ होती है या कोई पैसा खा रहा है, कोई रिश्वत ले रहा है, कोई भ्रष्टाचार कर रहा है तो ऐसे लोगों के खिलाफ मैं सख्त कार्यवाही भी करता हूँ। अगर कुर्सी पर बैठे हो तो जनता के लिए ढंग से काम करो। मैं व्यवस्थाओं को सुधारने की कोशिश कर रहा हूँ। इस मिशन में जनता के सहयोग के बिना सफलता नहीं मिल सकती। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि प्रदेश में जनजातीय भाइयों के लिए 89 विकासखण्डों में पेसा एक्ट लागू कर ग्राम सभाओं को अनेक अधिकार दिये गये हैं। इन अधिकारों का उपयोग कर हमारे जनजातीय भाई-बहन आत्म-निर्भरता की ओर बढ़ेंगे। (शेष पृष्ठ 6 पर)

आत्म-निर्भरता के लिए पारंपरिक खेती के साथ उद्यानिकी फसलों की खेती भी आवश्यक : राज्य मंत्री श्री कुशवाह

भोपाल : किसान भाइयों को आत्म-निर्भर और संपन्न होने के लिए आवश्यक है कि पारंपरिक खेती के साथ उद्यानिकी फसलों का भी उत्पादन करें। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री भारत सिंह कुशवाह मंडला जिले के नारायणगंज में एक दिवसीय कृषि मेला और कृषक प्रशिक्षण शिविर को संबोधित कर रहे थे।

राज्य मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि उद्यानिकी फसलों का मूल्य पारंपरिक फसलों से ज्यादा मिलता है। कृषक बंधु जब उद्यानिकी फसल के उत्पादों का प्रसंस्करण कर बाजार में बेचेंगे तो मुनाफा दोगुना होगा। उन्होंने कहा कि पिछले तीन वर्षों में हमने किसान भाइयों के उत्थान के लिए आदर्श विकासखंड को 5 करोड़ रूपये की राशि दी है।

राज्य मंत्री श्री कुशवाह ने कृषि मेला और कृषक प्रशिक्षण शिविर में प्रदर्शनी का अवलोकन किया और उत्कृष्ट खेती करने वाले कृषक बंधुओं को प्रमाण-पत्र सौंप कर सम्मानित भी किया। स्थानीय जन-प्रतिनिधि और विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

किसानों को आधुनिक कृषि का प्रशिक्षण दिलवाया जाएगा–मुख्यमंत्री

प्रदर्शनियों से मिलेगी किसानों को नवीनतम कृषि उपकरणों की जानकारी ● किसान गौरव सम्मेलन में जुटे प्रदेश के किसान

भोपाल : मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रदेश में किसानों को आधुनिक कृषि का प्रशिक्षण दिलवाया जाएगा। विशेष प्रदर्शनियों से नवीनतम कृषि उपकरण और अद्यतन तकनीक से किसानों को अवगत करवाया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसानों के कल्याण के अधिकतम कार्य कैसे किए जाएँ, इसके लिए निरंतर चिंतन चल रहा है। कृषक कल्याण प्राथमिकता है। इस कार्य में मुझे किसानों का सहयोग भी चाहिए। उन्होंने कहा कि जिलों में ऐसी बड़ी प्रदर्शनियाँ भी लगाई जायेगी, जिनमें आधुनिकतम कृषि उपकरणों का प्रदर्शन होगा। इनके अवलोकन से किसान प्रशिक्षित होंगे और कृषि कार्य को आसान बना सकेंगे। किसान बंधु नई कृषि तकनीक की जानकारी लेकर "आम के आम गुठलियों के दाम" सिद्धांत पर अधिक लाभ प्राप्त कर सकेंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान किसान गौरव सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन में प्रदेश के जिलों से आए किसान बंधुओं ने हिस्सा लिया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आधुनिक खेती का प्रशिक्षण भी किसानों को मिलना चाहिए। प्रदेश में प्राकृतिक कृषि को अपनाने में भी किसान रूचि व्यक्त कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों से जुड़ी योजनाओं को प्राथमिकता से लागू किया जा रहा है। इस सिलसिले में ऐसे कृषक परिवार, जिनके पास बाप-दादा के जमाने से एक या दो एकड़ राजस्व भूमि है और जिसमें वे कृषि कर रहे हैं तथा वे सामान्य एवं पिछड़ा वर्ग के हैं, उनके पुराने प्रकरण में पट्टा देने पर विचार किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि ट्रांसफार्मर के लिए अनुदान की योजना पूर्व सरकार ने बंद कर दी थी जिसे पुनः प्रारंभ किया जाएगा। मुख्यमंत्री खेत सड़क योजना भी प्रारंभ होगी। इसके अलावा कपिलधारा योजना का प्रभावी क्रियान्वयन होगा। किसानों के सुझाव पर आगामी बजट में किसानों के लिए आवश्यक राशि के प्रावधान होंगे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसानों के हित के लिए मध्यप्रदेश में निरंतर कार्य किया गया है। अंग्रेज और नवाबों के शासन और पूर्व की सरकारों के प्रयासों को मिला कर वर्ष 2003 तक प्रदेश में सिर्फ 7 लाख 50 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में ही सिंचाई क्षमता विकसित हुई थी, वर्तमान में सिंचाई क्षमता बढ़ कर 45 लाख हेक्टेयर हो गई है। अब इसे 65 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाने का लक्ष्य है। प्रदेश के प्रत्येक इलाके में सिंचाई योजनाएँ लागू

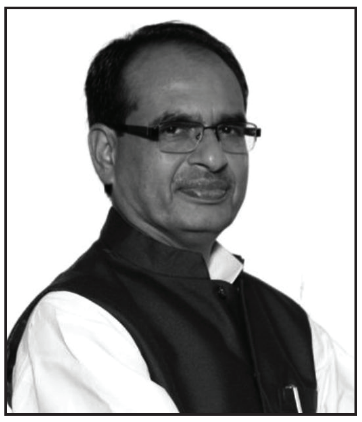

हैं। सिंचाई क्षमता के विस्तार का कार्य लगातार किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री किसान निधि के साथ मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना की राशि भी किसानों को दी जा रही है। उन्हें कार्यक्रम कर लाभान्वित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि पूर्व सरकार ने ब्याज माफी की घोषणा की थी लेकिन किया कुछ नहीं। अब राज्य शासन ने कर्ज के ब्याज की राशि को माफ करने का निर्णय लिया है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसानों को योजनाओं का अधिकतम लाभ दिलवाना राज्य सरकार का लक्ष्य है। किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। किसानों को समारोहपूर्वक राशि अंतरित की जाएगी। बिजली की सब्सिडी पर बड़ी राशि राज्य सरकार खर्च कर रही है। इसकी निरंतर मॉनीटरिंग की जाती है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसान बंधु भी योजनाओं के अमल में कहीं गड़बड़ हो तो उसकी जानकारी से अवगत करवाएँ। किसान सिंचाई योजनाओं को देखने जाएँ। यह देखें कि नहरों की मरम्मत हो रही है या नहीं। खेतों में टेल एंड तक पानी पहुँचे, यह हम सभी का कर्त्तव्य है। किसानों को पर्याप्त पानी मिले, इसे सुनिश्चित करें। प्रदेश के बांधों में पर्याप्त जल राशि मौजूद है। काफी बड़े बजट को खर्च कर योजनाएँ बन रही हैं। सिंचाई के लिए पाइप लाइनें बिछाई जा रही हैं। किसान बंधु क्षेत्र का भ्रमण कर सिंचाई संबंधी कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करें। सिंचाई से जुड़े निर्माणाधीन कार्यों पर निगाह रखें।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसान बंधु राजस्व संबंधी समस्याओं को हल करने में भी सहयोग करें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसानों से संबंधित कार्यों को हल करने के लिए आगामी वर्ष शिविर लगाए जाएंगे। किसान संगठनों के सदस्य, अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति में जिलों में शिविर प्रारंभ होने के बाद एक माह में सभी समस्याओं को हल करने का कार्य करें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने आह्वान किया कि शिविर प्रारंभ होने पर किसानों की भागीदारी से अभियान के तौर पर इस कार्य को किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि शामिल खाता बँटवारा और नामांतरण आदि से संबंधित कार्यों को किसान संगठन के सदस्यों के सहयोग से प्राथमिकता से निपटाया जाए। किसान की टीम यह भी वर्कआउट करे कि ऐसे कौन से कार्य हैं जिन्हें तत्काल करना आवश्यक है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि सेवा कार्य से कर्त्तव्य निर्वहन भी होता है और पुण्य भी मिलता है। दूसरों की जिंदगी बेहतर बना पाएँ तभी हमारा कर्त्तव्य पूरा होगा। ऐसी समस्याओं को बिना विलंब हल करने से किसान वर्ग को अधिक से अधिक फायदा दिलवाना और छोटी-मोटी परेशानियों से बचाना आसान हो जाता है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसान संगठन द्वारा जले ट्रांसफार्मर बदलने के कार्य में भी दायित्व निर्वहन किया जाए। संगठन के सदस्य इस दिशा में सजग रहें और ट्रांसफार्मर से जुड़ी व्यवस्थाओं को देखें। किसान संगठन तभी उपयोगी और प्रासंगिक हैं जब किसानों के हित में वे काम आएँ। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि इससे बड़ी संतोष की कोई बात नहीं होती है कि हम दिल से लोगों की सेवा करें और किसान बंधुओं के चेहरे पर मुस्कुराहट लाने का कार्य करें। तभी हमारा जीवन सार्थक होगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री जी और राज्य सरकार की योजनाएँ ढंग से लोगों तक पहुँचे। गड़बड़ी हो तो उसे दूर करने का प्रयास किया जाए।

किसान संगठन के अध्यक्ष श्री दर्शन सिंह ने कहा कि प्रदेश के किसान प्राकृतिक खेती के लिए आगे आ रहे हैं। गोपालन को महत्व दे रहे हैं। मध्यप्रदेश को 7 कृषि कर्मण अवार्ड मिले हैं। किसान संगठन मध्यप्रदेश की कृषि उपलब्धियों को बढ़ाने का कार्य करेगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान किसानों के समर्थक हैं। जैत ग्राम के एक किसान को निरंतर मुख्यमंत्री के रूप में देख कर किसान हर्षित हैं। ग्राम चौपाल लगा कर किसान वर्ग की समस्याएँ हल करने का कार्य किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सम्मेलन में किसान संगठन की वेबसाइट का लोकार्पण किया, जिसमें राज्य सरकार और केंद्र सरकार की कृषक कल्याण योजनाओं का विस्तृत उल्लेख है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने गुलाब की पंखुड़ियों से आमंत्रित किसानों का स्वागत किया।

मत्स्य-पालकों के हित में मध्यप्रदेश के बढ़ते कदम केंद्र सरकार से मिला मध्यप्रदेश को पुरस्कार

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मंत्रि-परिषद की बैठक के पहले की मंत्रीगण से चर्चा

भोपाल : मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मंत्रालय में मंत्रि-परिषद की बैठक के पहले मंत्रीगण से प्रदेश की कुछ उपलब्धियों पर चर्चा की।

मत्स्य-पालन क्षेत्र में उपलब्धि

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि मध्यप्रदेश मत्स्य महासंघ को विश्व मत्स्य दिवस 22 नवंबर को पुरस्कृत किया गया है। मत्स्य महासंघ को श्रेष्ठ महासंघ का दर्जा मिला है। प्रदेश में मत्स्य-पालन के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। गत वर्ष भी प्रदेश को पुरस्कृत किया गया था। मत्स्य-पालन के क्षेत्र में बालाघाट जिला देश में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले जिले के रूप में चयनित हुआ था। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मत्स्य-पालन विभाग की पूरी टीम को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।

आयुष क्षेत्र में नवीन कदम

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि आज भोपाल के पंडित खुशीलाल शर्मा आयुर्वेद महाविद्यालय में पंचकर्म और योग को जोड़ कर विकसित किए गए केंद्र का शुभारंभ हुआ है। इसके लिए आयुष विभाग और पूरी टीम बधाई की पात्र है। यह केंद्र आमजन के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। आयुष विभाग ने कोरोना काल में भी त्रिकूट काढ़े के व्यापक वितरण से जन-स्वास्थ्य रक्षा का दायित्व निभाया था।

टंट्या मामा बलिदान दिवस का सफल आयोजन

जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी सिलावट ने 4 दिसंबर को इंदौर में शहीद टंट्या मामा के बलिदान दिवस पर हुए कार्यक्रम की सफलता के लिए मुख्यमंत्री श्री चौहान को बधाई दी। प्रदेश की उपलब्धियों पर हर्ष व्यक्त कर मुख्यमंत्री श्री चौहान को समस्त मंत्री गण ने भी बधाई दी।

मंत्रि-परिषद की बैठक प्रारंभ होने से पहले राष्ट्र-गीत वंदे-मातरम का सामूहिक गान हुआ। इसके बाद एजेंडा चर्चा प्रारंभ हुई।

स्व-सहायता समूहों की आहरण सीमा में वृद्धि के लिये आरबीआई मानकों का पालन बैंक सुनिश्चित करें

स्व-सहायता समूहों की बैंक क्रेडिट लिंकेज प्रगति की समीक्षा बैठक

भोपाल : मध्यप्रदेश में 4 लाख 9 हजार स्व-सहायता समूह हैं, जिनसे लगभग 45 लाख 90 हजार गरीब ग्रामीण परिवार जुड़े हुए हैं। इन समूहों को नियमित प्रशिक्षण, बैंकों से ऋण दिलवा कर और आजीविका गतिविधियों से जोड़ कर उनके सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिये निरंतर कार्य किया जा रहा है। इन समूहों की आहरण सीमा में वृद्धि के लिये आरबीआई मानकों का पालन बैंक सुनिश्चित करें।

अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्री मलय श्रीवास्तव ने कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन और नाबार्ड द्वारा आयोजित स्व-सहायता समूहों की बैंक क्रेडिट लिंकेज प्रगति की समीक्षा बैठक में यह निर्देश दिये।

अपर मुख्य सचिव श्री श्रीवास्तव ने बैंकर्स को निर्देश दिये कि स्व-सहायता समूहों की प्रशिक्षित महिलाओं को बीसी के रूप में कार्य के लिये बैंक प्राथमिकता के आधार पर पद स्थापित करें। राज्य शासन द्वारा सचालित स्व-सहायता योजनाओं में बैंक समय पर ऋण उपलब्ध करायें। इस कार्य की नियमित समीक्षा की जाये।

श्री श्रीवास्तव ने कहा कि स्व-सहायता समूहों को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिये बैंकों से अधिक से अधिक ऋण मिल पाये, इसके लिये आवश्यक है कि उनमें वित्तीय साक्षरता हो। इसके लिये आरसेटी केन्द्रों द्वारा आजीविका मिशन के साथ समन्वय स्थापित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम किये जाएँ।

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी, म.प्र.डे राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन श्री एल.एम. बेलवाल, मुख्य महाप्रबंधक नाबार्ड श्री निरूपम मेहरोत्रा, महाप्रबंधक रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया श्री हेमन्त सोनी, संयोजक राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति श्री तरसेम सिंह जीरा शामिल हुए। भारतीय स्टेट बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ इंडिया, म.प्र. ग्रामीण बैंक, मध्यांचल ग्रामीण बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बडौदा, इंडियन बैंक, यूको बैंक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, केनरा बैंक, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक के राज्य स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

सहकारिता में नवाचार के लिए

जिला स्तरीय कोर कमेटी की बैठक संपन्न

भोपाल : कलेक्टर श्री अविनाश लवानिया की अध्यक्षता में सहकारिता की कोर कमेटी की बैठक संपन्न हुई। कलेक्टर श्री लवानिया ने कहा कि सहकारिता सेक्टर में नवाचार के अंतर्गत भोपाल जिले में नवीन सहकारी समितियों के गठन किया जाना है।

कलेक्टर श्री लवानिया ने कहा कि शासन की मंशानुसार भोपाल जिले के सहकारिता के अंतर्गत विविध उद्देश्यों के लिए नवीन सहकारी समितियों का गठन कर पंजीयन कराने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि इससे जनसामान्य को रोजगार मिल सकेगा और उनका आर्थिक उन्नयन हो पाएगा। कलेक्टर श्री लवानिया ने कहा कि इन गतिविधियों का प्रचार-प्रसार किया जाए। सहकारिता से संबंधित योजना के माध्यम से किस प्रकार से लोगों को प्रोत्साहित एवं लाभांवित किया जाए। इसकी रूपरेखा तैयार की जाए।

बैठक में अपर कलेक्टर श्री संदीप केरकेट्टा, सहकारी विशेषज्ञ श्री उमाकांत दीक्षित, प्रदेश सह-संयोजक सहकारिता, प्रकोष्ठ श्री जीवन मैथिल, पूर्व अध्यक्ष भोपाल कोपरेटिव सेंट्रल बैंक श्री विजय तिवारी, कोर कमेटी के सदस्य श्री विजय मिश्रा एईओ हथकरघा, श्री एसपी सैनी एडी मत्स्य विभाग, श्री अरूण दधीच सांख्यिकी अधिकारी, सुश्री शिखा डीएमओ मार्कफेड, सुश्री मीना मालाकार खाद्य नियंत्रक अधिकारी, श्री कैलाश मानेकर जीएमडीटी, अपना खान आईसी, श्री कैलाश प्रसाद गुप्ता, जिला पंचायत विभाग डॉ. संगीता, एबीपीओ वेटनरी, डीएसओ हेल्थ सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

किसान भाई अपनी फसलों का कराएँ बीमा - कृषि मंत्री श्री पटेल

प्रचार रथों को हरी झंडी दिखा कर किया रवाना

भोपाल : किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री श्री कमल पटेल ने किसान भाईयों से फसल बीमा योजना में अपनी फसलों का बीमा कराने की अपील की है। उन्होंने भोपाल से फसल बीमा योजना के प्रचार-प्रसार के लिये तैयार किये गये रथों को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया।

कृषि मंत्री श्री पटेल ने बताया कि दिसम्बर माह के प्रथम सप्ताह में प्रदेश में फसल बीमा सप्ताह मनाया जा रहा है। किसान भाईयों को सुविधा प्रदान करते हुए फसल अधिसूचित रकबे को 100 हेक्टेयर से घटाकर 50 हेक्टेयर कर दिया गया है। फसल बीमा योजना के प्रचार के लिये प्रदेश में 54 प्रचार रथ रवाना किये गये हैं। रथों द्वारा जिलों की प्रत्येक तहसील और ग्राम पंचायतों

में फसल बीमा योजना का प्रचार किया जाएगा। किसानों को किसान पाठशाला और संगोष्ठी आयोजित कर बीमा प्रक्रिया एवं दावा राशि के भुगतान के संबंध में जानकारी प्रदान की जायेगी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मत्स्य महासंघ और मछुआरों को दी बधाई

उत्कृष्ट कार्य के लिए मिला राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार

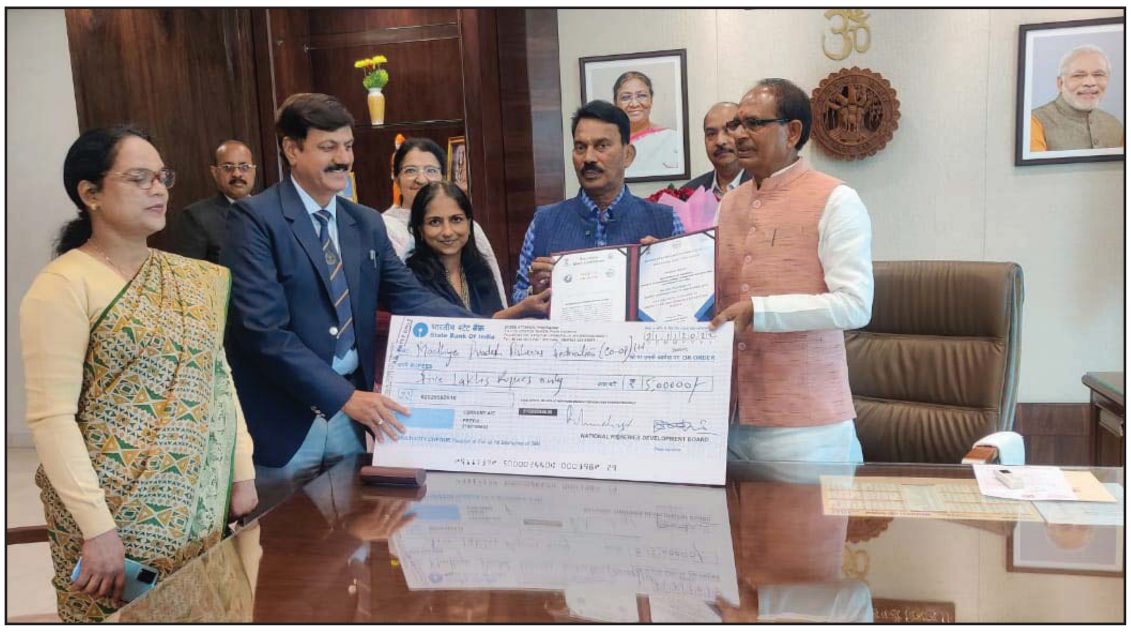

भोपाल : मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान को मंत्रालय में जल संसाधन, मत्स्य-विकास और मछुआ कल्याण मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने मध्यप्रदेश मत्स्य महासंघ को केंद्र सरकार से प्राप्त राष्ट्रीय पुरस्कार की जानकारी देते हुए पुरस्कार प्रतीक सौंपा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने इस उपलब्धि पर मंत्री और अध्यक्ष मध्यप्रदेश मत्स्य महासंघ श्री तुलसीराम सिलावट सहित मत्स्य महासंघ, मछुआ सोसाइटी और मछुआरों को बधाई और शुभकामनाएँ दीं।

प्रमुख सचिव मत्स्य-पालन श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव, महासंघ के प्रबंध संचालक श्री पुरुषोत्तम धीमान, संचालक श्री भारत सिंह और अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि गत 22 नवंबर को केंद्र शासित प्रदेश दमन में राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड हैदराबाद ने एक समारोह में मध्यप्रदेश मत्स्य महासंघ को 5 लाख की पुरस्कार राशि और प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया।

किसानों को उद्यानिकी फसलें तथा जैविक खेती अपनाने पर जोर

जबलपुर : मध्य प्रदेश के उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्यमंत्री श्री भारत सिंह कुशवाहा ने किसानों को उद्यानिकी की फसलें तथा जैविक खेती को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने पर जोर दिया है। श्री कुशवाहा ने कहा कि फसलों के साथ-साथ प्रसंस्करण को जोड़कर किसान अपनी आमदनी को कई गुना बढ़ा सकते हैं। यह बात किसानों को समझाने की जरूरत है। कृषि वैज्ञानिक और कृषि विज्ञान केन्द्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्यमंत्री श्री कुशवाहा गत दिवस यहां जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय परिसर में स्थित कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान में इस विषय पर आयोजित परिचर्चा को संबोधित कर रहे थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस परिचर्चा में विधायक श्री अशोक रोहाणी, विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार मिश्रा एवं कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एसआर के सिंह भी मौजूद थे। परिचर्चा के दौरान मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से संचालित हो रही विभिन्न गतिविधियों को पॉवर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री श्री भारत सिंह कुशवाहा ने परिचर्चा में उद्यानिकी फसलों को अपनाने तथा प्राकृतिक एवं जैविक खेती से होने वाले फायदों को बताया। उन्होंने बताया कि वे स्वयं पिछले पांच साल से प्राकृतिक एवं जैविक खेती को अपना रहे हैं। इसकी गुणवत्ता और उपयोगिता को उन्होंने खुद महसूस किया है। इससे फसल की अच्छी कीमत एवं अच्छा मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है। श्री कुशवाहा ने कहा कि उद्यानिकी फसलों को अपनाकर तथा खाद्य प्रसंस्करण की छोटी-छोटी ईकाई स्थापित कर किसान अच्छा लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने कहा कि केन्द्र एवं राज्य शासन द्वारा उद्यानिकी फसलों को बढ़ावा देने तथा जैविक एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित कई योजनाएं शुरू की गई हैं। किसानों को खाद्य प्रसंस्करण ईकाई स्थापित करने में सहायता देने केन्द्र शासन द्वारा शुरू की गई प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना में 10 लाख रुपये तक की ईकाई की स्थापना पर 35 प्रतिशत अनुदान राशि उपलब्ध कराई जा रही है।

विधायक श्री अशोक रोहाणी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए मटर, स्वीट कार्न, मशरूम, सिंघाड़ा जैसी क्षेत्र की फसलों के लिए फूड प्रोसेसिंग यूनिट देने का आग्रह किया। परिचर्चा में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा, डॉ. एस.आर.के. सिंह ने भी विचार व्यक्त किये।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन योजना का लाभ लेने की अपील

सीहोर : राष्ट्रीय पशुधन मिशन योजना में पशुधन विकास के माध्यम से पशुधन पालकों और किसानों विशेष रूप से छोटे पशुपालकों के पोषण और जीवन स्तर में सुधार करने के उददेश्य से पशुधन क्षेत्र के विकास के लिए राष्ट्रीय पशुधन योजना बनाई गई है। राष्ट्रीय पशुधन योजना में व्यापक रूप से पशुधन उत्पादन और मात्रात्मक और गुणात्मक सुधार सुनिश्चित करना है। साथ ही सभी हितधारकों की क्षमता निर्माण को कवर करना है।

मिशन के प्रमुख कार्य आहार और चारे और उपलब्धता के अंतर को कम करना, स्वदेशी नस्लों का संरक्षण और सुधार करना, भूमिहीन छोटे सीमान किसानों के लिए आजीविका के अवसरों में वृद्धि करना और उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण बेहतर पशु उत्पाद उपलब्ध कराना। योजना में पशुपालकों का समग्र सामाजिक, आर्थिक उत्थान करना नियत है। इस योजना के 4 उप मिशन बनाए गए हैं। योजना में उप मिशन, पशुधन विकास संबंधी, पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुअर विकास संबंधी उप मिशन, चारा, आहार विकास संबंधी,कौशल विकास, प्रायोगिकी हस्तांतरण और विस्तार संबंधी उप मिशन तैयार किए गए है।

ई-केवायसी कराएं, किसान सम्मान निधि की अगली किश्त पाएं

शाजापुर: प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के सभी हितग्राहियों से अनुरोध है कि वे पीएम किसान पोर्टल पर ई-केवायसी अपडेट कराएं। योजना के अंतर्गत व 13 वीं किश्त का भुगतान हितग्राहियों को बिना ई-केवायसी के नहीं होगा।

कलेक्टर श्री दिनेश जैन ने किसानों से अनुरोध किया है कि वे पीएम किसान पोर्टल पर ई-केवायसी अपडेट कराएं। योजना के अंतर्गत व 13वी किश्त का भुगतान हितग्राहियों को बिना ई-केवायसी के नहीं होगा। जिले में कुल 14553 हितग्राहियों का पीएम किसान पोर्टल पर ई-केवायसी किया जाना शेष है। ई-केवायसी की सुविधा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के पोर्टल पर फार्मर कार्नर एवं पीएम किसान मोबाईल एप्प पर नि:शुल्क उपलब्ध कराई गई है।

इस सुविधा के माध्यम से आधार लिंक मोबाईल नम्बर पर ओटीपी के माध्यम से ई-केवायसी पूर्ण की जा सकती है। इसके अतिरिक्त नजदीक के कॉमन सर्विस सेंटर के माध्यम से भी ई-केवायसी ओटीपी अथवा बायोमैट्रिक से पूर्ण की जा सकती है। कॉमन सर्विस सेंटर के माध्यम से ई-केवायसी कराने पर इसका शुल्क 15 रूपये निर्धारित है।

गेहूं में गंधक (Sulphur) की कमी को दूर करें

भोपाल: गंधक (Sulphur) की कमी को दूर करने के लिये गंधक युक्त उर्वरक जैसे अमोनियम सल्फेट अथवा सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग अच्छा रहता है। जस्ते की कमी वाले क्षेत्रों में जिंक सल्फेट 25 कि.ग्रा./हे. की दर से धान-गेहूं फसल चक्र वाले क्षेत्रों में साल में कम से कम एक बार प्रयोग करें। यदि इसकी कमी के लक्षण खड़ी फसल में दिखाई दें तो 100 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 500 ग्रा. बुझा हुआ चूना 200 ली. पानी में घोलकर 2-3 छिडक़ाव करें। इसके बाद आवश्यकतानुसार एक सप्ताह के अंतर पर 2-3 छिडक़ाव साफ मौसम एवं खिली हुई धूप में करें।

गेहूं की विभिन्न अवस्थाओं में सिंचाई से होता है फायदा

भोपाल: गेहूं की विभिन्न अवस्थाओं में सिंचाई से होता है फायदा – रबी फसलों में गेहूँ को ही सबसे अधिक सिंचाई से फायदा होता है। देशी उन्नत जातियों अथवा गेहूँ की ऊंची किस्मों की जल की अवश्यकता 25 से 30 से.मी. है। इन जातियों में जल उपयोग की दृष्टि से तीन क्रांतिक अवस्थाएं होती हैं। जो क्रमश: कल्ले निकलने की अवस्था (बुआई के 30 दिन बाद) पुष्पावस्था (बुआई के 50 से 55 दिन बाद) और दूधिया अवस्था (बुआई के 95 दिन बाद) आदि है।

इन अवस्थाओं में सिंचाई करने से निश्चित उपज में वृद्धि होती है। प्रत्येक सिंचाई में 8 से.मी. जल देना आवश्यक है। बौनी गेहूँ की किस्मों को प्रारंभिक अवस्था से ही पानी की अधिक आवश्यकता होती है-क्राउन रूट (शिखर या शीर्ष जड़ें) और सेमीन जड़ें की अवस्था में शिखर जड़ों से पौधों में कल्लों का विकास होता है जिससे पौधों में बालियां ज्यादा आती हैं और फलस्वरूप अधिक उपज मिलती है। सेमीनल जड़ें पौधों को प्रारंभिक आधार देती हैं। अत: हर हालत में बुआई के समय खेत में नमी काफी मात्रा में हो। पलेवा देकर खेत की तैयारी करके बुआई करने पर अच्छा अंकुरण होता है। इन जातियों को 40 से 50 से.मी. जल की आवश्यकता होती है। और प्रति सिंचाई 6 से 7 से.मी. जल देना जरूरी है। अगर दो सिंचाइयों की सुविधा है तो पहली सिंचाई बुआई के 20-25 दिनों बाद प्रारंभिक जड़ों के निकलने के समय करें और दूसरी सिंचाई फूल आने के समय यदि तीन सिंचाइयाँ करना संभव है तो पहली सिंचाई बुआई के 20 से 25 दिन बाद (शिखर जड़ें निकलने के समय), दूसरी गांठों के पौधों में बनने के समय (बुआई के 60-65 दिन बाद) और तीसरी सिंचाई पौधों में फूल आने के बाद करें।

जहां चार सिंचाईयों की सुविधा हो वहां, पहली सिंचाई बुआई के 21 दिन बाद शिखर जड़ों के निकलते समय, दूसरी पौधों में कल्लों के निकलते समय (बुआई के 40 से 45 दिनों बाद), तीसरी बुआई के 60-65 दिनों बाद (पौधों में गांठें बनते समय) और चौथी सिंचाई पौधों में फूल आने के समय करें। चौथी और पाँचवी सिंचाई विशेष लाभप्रद सिद्ध नहीं होती है। इनको उसी समय करें जब मिट्टी में पानी की संचय की शक्ति कम हो। बलुई या बलुई दोमट मिट्टी में इस सिंचाई की जरूरत होती है।

पिछेती गेहूँ में पहली पांच सिंचाइयां 15 दिनों के अंतर से करें। फिर बालें निकलने के बाद यह अंतर 9 से 10 दिन का रखें। पिछेती गेहूँ की दैहिक अवस्था पिछड़ जाती है और बालों का निकलना और दानों का विकास तो ऐसे समय पर होता है, जबकि वाष्पीकरण तेजी से होता है और ऐसी दशा में खेत में नमी की कमी का दोनों के विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, और इसी लिए दाना सिकुड़ जाता है। इसीलिए देर से बोये गये गेहूँ में जल्दी सिंचाई कम दिनों के अंतर से जरूरी है। सामान्यत: गेहूँ की फसल में सिंचाई मुख्यत: बार्डर विधि में 60 से 70 प्रतिशत सिंचाई क्षमता मिल जाती है और क्यारी विधि की तुलना में 20-30 प्रतिशत बचत पानी की होने के साथ-साथ एवं श्रम की बचत भी होती है। जहां ढाल खेत की दोनों दिशाओं में हो वहां क्यारी पद्धति से सिंचाई करना लाभदायक है, जहाँ ट्यूबवेल द्वारा पानी दिया जाता है, वहां यह विधि अपनाई जाती है। जहाँ पर ज्यादा हल्की भूमि अथवा उबड़-खाबड़ हो वहाँ सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धति सबसे उपयुक्त होती है। इस विधि में 70-80 प्रतिशत सिंचाई क्षमता मिल जाती है।

संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान-प्रदान के चक्र को (इकालाजी सिस्टम) प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकुल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान-प्रदान का चक्र Ecological system निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ-साथ गौ पालन किया जाता था, अर्थात कृषि एवं गोपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में गोपालन धीरे-धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह-तरह की रसायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है, और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रसायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुध्द रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रांति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है अधिक उत्पादन के लिये खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरको एवं कीटनाशक का उपयोग करना पड़ता है जिससे सामान्य व छोटे कृषक के पास कम जोत में अत्यधिक लागत लग रही है और जल, भूमि, वायु और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है साथ ही खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे है। इसलिए इस प्रकार की उपरोक्त सभी समस्याओं से निपटने के लिये गत वर्षो से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिध्दान्त पर खेती करने की सिफारिश की गई, जिसे प्रदेश के कृषि विभाग ने इस विशेष प्रकार की खेती को अपनाने के लिए, बढ़ावा दिया जिसे हम "जैविक खेती" के नाम से जानते है। भारत सरकार भी इस खेती को अपनाने के लिए प्रचार-प्रसार कर रही है।

जैविक खेती से होने वाले लाभ

कृषकों की दृष्टि से लाभ –

- भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
- सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से कास्त लागत में कमी आती है।
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।

मिट्टी की दृष्टि से –

- जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
- भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती हैं।
- भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

पर्यावरण की दृष्टि से –

- भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती हैं।
- मिट्टी खाद पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण मे कमी आती है।
- कचरे का उपयोग, खाद बनाने में, होने से बीमारियों में कमी आती है।
- फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वद्धि
- अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ताा का खरा उतरना।

जैविक खेती, की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है अर्थात जैविक खेती मृदा की उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढ़ाने में पूर्णत: सहायक है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक खेती की विधि और भी अधिक लाभदायक है। जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती ही है इसके साथ ही कृषक भाइयों को आय अधिक प्राप्त होती है तथा अंतराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं। जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा में कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आधुनिक समय में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यन्त लाभदायक है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हों, शुद्ध वातावरण रहे एवं पौष्टिक आहार मिलता रहे, इसके लिये हमें जैविक खेती की कृषि पध्दतियाँ को अपनाना होगा जोकि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं मानवीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बगैर समस्त जनमानस को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमें खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

जैविक खेती हेतु प्रमुख जैविक खाद एवं दवाईयाँ

जैविक खादें:-

1. नाडेप
2. बायोगैस स्लरी
3. वर्मी कम्पोस्ट
4. हरी खाद
5. जैव उर्वरक (कल्चर)
6. गोबर की खाद
7. नाडेप फास्फो कम्पोस्ट
8. पिट कम्पोस्ट (इंदौर विधि)
9. मुर्गी का खाद
10. भभूत अमतपानी
11. अमृत संजीवनी
12. मटका खाद
13. गौ-मूत्र
14. नीम- पत्ती का घोल/निबोली/खली
15. मट्ठा
16. मिर्च/लहसुन
17. लकड़ी की राख
18. नीम व करंज खली

छोटे किसानों के लिये किसान सम्मान निधि वरदान : कृषि मंत्री श्री पटेल

किसान और गाँवों को बनायेंगे आत्म-निर्भर ● एग्री-एक्सपो इंडिया का किया शुभारंभ

भोपाल : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्म-निर्भर भारत के संकल्प को पूरा करने के लिये हम वचनबद्ध हैं। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में किसान और गाँवों को आत्म-निर्भर बनाने का कार्य किया जा रहा है। किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री श्री कमल पटेल ने भोपाल में एग्री-एक्सपो इंडिया का शुभारंभ करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना लघु एवं सीमांत किसानों के लिये वरदान है। एग्री-एक्सपो इंडिया में श्री कमल सिंह आंजना, श्री महेश चौधरी, श्री गोविंद गोदारा और महाप्रबंधक नाबार्ड श्री एस.के. ताल्लुकदार सहित बड़ी संख्या में किसान शामिल थे।

कृषि मंत्री श्री पटेल ने कहा है कि देश की अर्थ-व्यवस्था कृषि आधारित है। आबादी का 70 प्रतिशत भाग कृषि एवं कृषि आधारित संसाधनों पर निर्भर करता है। मुख्यमंत्री श्री चौहान के मार्गदर्शन में हम किसान और गाँव को आत्म-निर्भर बनाने के लिये निरंतर कार्य कर रहे हैं। देश में कृषकों की समृद्धि के लिये प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में निरंतर कल्याणकारी निर्णय लिये जा रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री ग्राम-सड़क योजना का क्रियान्वयन कर गाँव को मुख्य सड़कों से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य किया गया। किसानों को सशक्त बनाने के लिये किसान क्रेडिट-कार्ड योजना लागू की गई।

कृषि मंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी की संकल्पना अनुसार किसानों की आय को दोगुना करने के लिये निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। सरकार द्वारा एक लाख करोड़ रूपये के कृषि अधो-संरचना फण्ड (आईएएफ) की स्थापना कर एक नई क्रांति का सूत्रपात किया गया है। कृषि उत्पाद समूहों (एफपीओ) का प्रदेश में गठन किया जा रहा है। राज्य में 10 हजार एफपीओ बनाये जा रहे हैं। प्रत्येक विकासखण्ड में दो-दो एफपीओ का गठन कर लिया गया है। प्रसन्नता की बात है कि मध्यप्रदेश इसके क्रियान्वयन में अव्वल नम्बर है। राज्य कृषि के क्षेत्र में नवाचारों में भी देश में पहले नम्बर पर है।

कृषि मंत्री श्री पटेल ने कहा कि किसानों के सशक्तिकरण के लिये प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना संचालित की जा रही है। छोटे किसानों को दोनों योजनाओं में कुल मिला कर 10-10 हजार रूपये की राशि प्रतिवर्ष दी जा रही है। उन्होंने कहा कि छोटे किसानों के लिये यह राशि आर्थिक संबल का काम कर रही है।

कृषि मंत्री श्री पटेल ने कृषि विभाग और युवा उड़ान फाउण्डेशन के कृषि-एक्सपो में शामिल सभी किसानों, कृषि वैज्ञानिकों और कृषि संबद्ध समस्त स्टेक होल्डर्स को बधाई और शुभकामनाएँ दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भोपाल में 3 दिवसीय कृषि-एक्सपो से किसानों को निश्चित ही लाभ मिलेगा, जो खेती-किसानी के उन्नयन और किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण में मील का पत्थर साबित होगा।

(पृष्ठ 1 का शेष)

व्यवस्था सुधार का मेरा मिशन जन-सहयोग के बिना सफल नहीं होगा.....

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने अपने नव निर्वाचित सरपंचों के अधिकार बढ़ाये हैं। इन अधिकारों का उपयोग कर ग्राम स्वराज की नई परिकल्पना को मूर्त रूप दिया जाये। सरकार की जनहितकारी योजनाएँ निचले स्तर तक पहुँचे और सभी पात्र लोगों को उसका लाभ मिले, यह हमारी प्राथमिकता है।

भारतीय जनता पार्टी की सरकार में जो विकास और गरीबों के हित में कार्य हुए है, ऐसे काम पूर्व की सरकारों में कभी नहीं हुए। चारों तरफ सड़कों का जाल, पानी और बिजली की व्यवस्था के साथ हमारे किसान भाइयों एवं गरीबों के लिये अनेक योजनाएँ चला कर लाभ दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि वर्ष 2018 में तत्कालीन सरकार ने किसान भाइयों का कर्ज 10 दिन में माफ करने की घोषणा की थी। सवा साल हो गए कर्ज माफ तो किया नहीं उस कर्जे पर ब्याज जरूर चढ़ गया। इस ब्याज को उतारने के लिये मैं इसी बजट में राशि का प्रावधान कर रहा हूँ। ब्याज के कारण जो डिफाल्टर हो गए, उनका पैसा अब किसान नहीं हम भरेंगे, हमारी सरकार भरेगी, ताकि किसानों से डिफाल्टर का टैग हट जाए।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसान भाई जरा गंभीरता से सोच कर देखे कि बिना सिंचाई के उनका कल्याण हो सकता है। हमने एक नहीं अनेक सिंचाई योजनाएँ पूरी की और जीरो प्रतिशत ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराने जैसे किसान हितैषी कदम उठाए हैं। बिजली की व्यवस्था बेहतर करने की कोशिशें लगातार जारी है। किसानों को पर्याप्त बिजली दी जा रही है। खराब ट्रांसफार्मर भी शीघ्रता से बदले जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि गरीबों के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, पढ़ाई-दवाई और रोजगार का इंतजाम भी किया जा रहा है। फ्री राशन की योजना आज तक किसी ने नहीं दी। प्रधानमंत्री 5 किलो राशन भेजते हैं, मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना में भी 5 किलो राशन दिया जाता है। गरीब के राशन में यदि कोई गड़बड़ी करेगा उसे किसी कीमत पर छोड़ा नहीं जायेगा। तो उसे सीधे हथकड़ी लगाकर जेल भेजा जायेगा।।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना में प्रदेश के गरीबों को आवास बना कर दिये जा रहे हैं। आवास योजना की राशि सीधे हितग्राही के खाते में अंतरित की जा रही है, इसमें यदि कोई गड़बड़ी करता है या पैसे की मांग करता है तो उसके खिलाफ भी सख्त कार्यवाही होगी। जिन परिवारों के पास आवास के लिये भूमि नहीं है, उन्हें मुख्यमंत्री भू-आवासीय अधिकार योजना में जमीन का पट्टा दिया जायेगा। इसकी शुरूआत अटल जी के जन्मदिन 25 दिसंबर से की जायेगी। कई सालों से बनी पुरानी कॉलोनियों को वैध कर विकास के सारे काम करवाये जायेंगे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि राज्य सरकार सबको साथ लेकर आगे बढ़ना चाहती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर काम किये जा रहे हैं। शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन कर सी.एम.राइज स्कूल खोले जा रहे है। सीधी जिले में ही सी.एम.राइज स्कूल स्वीकृत हो चुके हैं, जिनके भवन निर्माण की निविदा जारी हो चुकी है। मेधावी बच्चों को लेपटॉप के साथ उनकी उच्च शिक्षा की फीस भी राज्य सरकार भर रही है। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति करते हुए मध्यप्रदेश की धरती पर मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई अंग्रेजी में नहीं अब हिंदी भाषा में की जाएगी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि रोजगार के क्षेत्र में भी हम क्रांति करने का प्रयास कर रहे हैं। सरकारी नौकरी में 1 लाख 13 हजार रिक्तियाँ निकल चुकी है और स्व-रोजगार के माध्यम से भी रोजगार उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। स्व-सहायता समूहों को आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाते हुए महिलाओं को भी आत्म-निर्भर बनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि जल जीवन मिशन शुरू किया है। मिशन में पाइपलाइन बिछा कर हर घर नल से जल दिया जा रहा है। अब मेरी बहनों को पानी के लिये हैंडपंप पर जाना नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मिशन में हो रहे कार्यों पर अधिकारियों के साथ जन-प्रतिनिधि भी निगरानी रखें।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने खुशी जाहिर की कि सीधी जिले में नवाचार करते हुए बिल्हा डैम का पुनर्निर्माण शुरू किया गया है। इससे लगभग 50 हजार हेक्टेयर में सिंचाई की व्यवस्था हो सकेगी। उन्होंने जिले में महुआ उत्पादन में भी नवाचार करने पर बधाई दी। जिले के मझौली विकासखंड की खजुरिया ग्राम पंचायत में 100 एकड़ जमीन पर गो-अभयारण्य बनाया जा रहा है, जो गौ माता को आसरा और सहारा देगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि सीधी को अत्याधुनिक विकसित शहर बनाया जाएगा। मिनी स्मार्ट सिटी के काम का अगला फेज हम फिर लेकर आएंगे, जिससे सीधी लगातार आगे बढ़ता रहे। जिले के विकास में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इंजीनियर कॉलेज भी यहाँ प्रारंभ करेंगे जिससे सीधी के बच्चों को ढंग से शिक्षा का लाभ मिल सके।

मुख्यमंत्री ने अपील की कि फालतू बिजली न जलाएं। इससे सरकार को बड़ी बचत होगी। सब मिल कर संकल्प ले कि सीधी जिले को आगे बढ़ाने में सरकार का साथ देंगे। अपने शहर-गाँव को बेहतर बनाएंगे और भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ेंगे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सीधी जिले के तीन अधिकारी तहसीलदार मझौली श्री वी.के.पटेल, परियोजना समन्वयक रमसा श्री सुजीत मिश्र और जनपद मझौली श्री मान सिंह सैयाम को अच्छे काम के लिये सम्मानित किया। शिकायत के आधार पर पूर्व प्रभारी अधिकारी मनरेगा (वर्तमान में कटनी पदस्थ), जिला शिक्षा अधिकार और प्रभारी तहसीलदार रामपुर नैकिन को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया। जनजातीय कार्य, अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री सुश्री मीना सिंह और सांसद श्रीमती रीति पाठक ने भी संबोधित किया। विधायक श्री केदारनाथ शुक्ला ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में विधायक, जन-प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे।

डेयरी फार्मिंग में काम आने वाले उपकरणों की जानकारी

डेयरी फार्मिंग में बढ़ रहा है मशीनों का उपयोग

आधुनिक समय में सभी क्षेत्रों में मशीनों का उपयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। इस दौड़ मे डेयरी फार्मिंग भी पीछे नहीं है। इस क्षेत्र में भी आधुनिक मशीनों व उपकरणों का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है। पहले डेयरी व्यवसाय के लिए कई मजदूरों की आवश्यकता होती थी लेकिन आज आधुनिक मशीनों की सहायता ली जाने लगी है। इससे समय और कम लागत पर अधिक दुग्धोत्पादन प्राप्त किया जा रहा है। इन आधुनिक मशीनों में दूध निकालने वाली मशीन, दूध को ठंडा रखने की मशीन, पशुओं को गर्मियों में ठंडा रखने के लिए फोगर सिस्टम जैसे कई उपकरणों का इस्तेमाल डेयरी व्यवसाय में किया जा रहा है।

डेयरी पशु आवास उपकरण

डेयरी फार्मिंग में सबसे जरूरी पशु के आवास स्थल के चयन की है। इसके लिए पशुओं के रहने की जगह साफ-सुथरी होनी चाहिए। गायों व भैंसों का आश्रम स्थल आरामदायक और स्थास्थ्यकर हो। इसके लिए गर्मियों में हवा व पानी के लिए खास इंतजाम किए जाने चाहिए। जैसे- कूलर, पंखा आदि की व्यवस्था। देखने में आया है कि जब पशु स्वस्थ होता है तो दूध उत्पादन भी अच्छा होता है।

धुंध शीतलन प्रणाली

यह उपकरण तापमान को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाता है। इस यंत्र के प्रयोग से गौशाला के भीतर का तापमान सही बना रहता है जिससे पशु को आराम मिलता है। बता दें डेयरी गाय व भैंसों की परवरिश करते समय, मामूली कुप्रबंधन डेयरी गायों में गर्मी तनाव का कारण बन सकता है। इसके लिए एक धुंध शीतलन प्रणाली डेयरी खेती के लिए एक अच्छा समाधान है। डेयरी फार्म का मिस्ट कूलिंग सिस्टम मुख्य रूप से मिस्टिंग मशीनों और मिस्टिंग फिटिंग से बना है। यह डेयरी गायों में गर्मी के तनाव की समस्या को हल करने में मदद करने के लिए एक पूर्ण प्रणाली है।

डेयरी फार्मिंग में खिला उपकरण (Dairy Farming)

डेयरी गायों को आहार खिलाने के काम में आने वाले उपकरण को खिला उपकरण कहा जाता है। इसके लिए अनाज फीड ग्राइंडर की आवश्यकता होगी। डेयरी उत्पादकों के लिए एक फीड ग्राइंडर होना आवश्यक है। आप फीड ग्राइंडर का उपयोग करके उन घटकों का निर्धारण कर सकते हैं जिन्हें डेयरी गायों को खिलाना चाहते हैं। फीड ग्राइंडर की सहायता से चारा सहित अन्य अवयवों को मिलाया जा सकता है।

हरा चारा कटर

यदि आप अपनी डेयरी गायों को हरा चारा जैसे- अनाज, घास, सेम, ज्वार आदि हरा चारा खिलाना चाहते हैं तो आपको इसके लिए हरा चारा कटर की आवश्यकता होगी। इसकी सहायता से आप अपनी गायों को हरा चारा छोटे टुकड़ों में काटकर उन्हें खाने के लिए दे सकेंगे। इसलिए डेयरी फार्मिंग के लिए आप हरा चारा कटर को खरीद सकते हैं।

भूसा काटने वाली मशीन

भूसा काटने वाला चारा काटने वाली मशीन है। इस मशीन से सूखे चारे को आसानी से काटा जा सकता है। इसके लिए चारे को मशीन में डाला जाता है और दो दांतेदार रोलर्स के बीच पकड़ लिया जाता है, जिससे इसे एक शेयर प्लेट में स्थानांतरित किया जा सकता है, जहां इसे एक मोटी चक्का पर रखा जाता है और चाकू से कम लंबाई में बदल दिया जाता है। इससे छोटे-छोटे टुकड़ों में चारा बदल जाता है जिसे पशु आसानी से खा सकते हैं।

चारा ग्राइंडर

अनाज से गाय का चारा तैयार करने वाली मशीन को चारा ग्राइंडर कहा जाता है। इसकी मदद से डेयरी की गायों के खाने के लिए चारा तैयार किया जाता है। इसमें कुछ ब्लेड होती है जो चारे को निर्धारित आकार में काटती है। इस मशीन का उपयोग मुख्य रूप से चारा कटिंग या क्रशिंग में उपयोग किया जाता है। इस मशीन का उपयोग करके किसान अनाज से गाय का चारा तैयार कर सकते है।

दूध दुहने की मशीन

दूध दुहने वाली मशीन का उपयोग करके डेयरी गायों से दूध निकाला जाता है। दूध दुहना कार्य एक मोटर की सहायता से किया जाता है। इस मशीन में एक वैक्यूम पंप होता है जो एक नाली के माध्यम से दूध देने वाली इकाई तक जाता है।

स्वचालित मिल्कर

इस उपकरण का उपयोग गाय का दूध तेजी से निकलने के लिए किया जाता है। इस विधि से दूध हाथ की अपेक्षा बहुत तेजी से निकाला जा सकता है। हालांकि ये विधि गायों के लिए अच्छी नहीं मानी जाती है। क्योंकि ये गायों को अधिक दूध पैदा करने के लिए प्रेरित करती है जो सही नहीं है।

दुग्ध पाइपलाइन

दुग्ध उत्पाद में प्रयुक्त दुग्ध पाइनलाइन दूध देने वाले निपल्स जुड़ी होती है। इसकी सहायता से दूध को खींचा जाता है। दूध देने वाली पाइपलाइन में एक स्थायी रिटर्न पाइप, एक वैक्यूम पाइप और तात्कालिक सेल प्रवेश द्वार का उपयोग किया जाता है। यह पाइपलाइन दूध भंडारण टैंक से जुड़ी होती है जहां दूध को एकत्रित किया जाता है। सिस्टम गौशाला के ऊपर या खलिहान के चारों ओर स्थापित किया जा सकता है। उपकरण दूध देने वाले के निपल्स से जुड़ा होता है, और वैक्यूम सिस्टम का उपयोग करके दूध को पाइप में खींचा जाता है।

पाश्चराइजर उपकरण

डेयरी में गाय के निकाले गए दूध को सीधा सप्लाई नहीं किया जाता है। इसके लिए दूध को पाश्चुरीकरण किया जाता है। ताकि गाय के दूध में शामिल हानिकारक जीवाणु नष्ट हो सकें। इसके लिए दूध को पाश्चुरीकरण उपकरण की सहायता से गर्म किया जाता है। इस उपकरण की सहायता से एक निश्चित तापमान पर एक निश्चित समय के लिए रखा जाता है। इसे लगातार हिलाते हुए ठंडा करने के लिए रखा जाता है। इसके बाद इसे आगे संग्रहित या संसाधित किया जाता है। जैसे पाश्चुरीकरण के बाद ही डेयरी के दूध को पॉलीथीन की थैलियों में उपभोक्ता तक पहुंचाया जाता है।

सेपरेटर

डेयरी फार्मिंग में सेपरेटर वह जगह है जहां क्रीम और स्किम्ड दूध को अलग किया जाता है। ये उपकरण यह प्लास्टिक, एल्यूमीनियम और स्टेनलेस स्टील के बने होते हैं। इसका उपयोग दूध उत्पाद बनाने में किया जाता है। जैसे- छाछ, दही, मक्खन, घी आदि।

टैंक और होमोजेनाइजर

डेयरी में दूध को टैंकों में संग्रहित किया जाता है। इसके बाद होमोजेनाइजर मशीन की सहायता से इसे एक साथ मिलाया जाता है। यह दूध को मिश्रित करने का उपकरण है। बता दें कि यह दूध उद्योग में वर्षों से मानक रहा है। एक टैंक में दूध का एक बड़ा बैच एकत्र किया जाता है। चूंकि दूध बड़ी संख्या में जानवरों से आता है, टैंक के कुछ क्षेत्रों में दूध थोड़ा अलग होगा। उदाहरण के लिए, एक क्षेत्र में वसा की मात्रा अधिक हो सकती है जबकि दूसरे में बहुत कम हो सकती है। इसलिए, सभी प्रकार के दूध को मिश्रित किया जाता है और फिर बहुत छोटे छिद्रों की एक श्रृंखला के माध्यम से गुजारा जाता है। यह दबाव टैंक के विभिन्न क्षेत्रों से दूध को पूरी तरह से मिश्रण करने के लिए मजबूर करता है, जिससे एक सजातीय मिश्रण बनता है।

डेयरी फार्मिंग के लिए उपयोगी दो महत्वपूर्ण उपकरण

डेयरी क्षेत्र के लिए सबसे अधिक जिन ब्रांड उपकरणों का उपयोग किया जाता है उनमें टीएमआर वैगन और मोबाइल श्रेडर यानि चारा कटाई मशीन है।

टीएमआर वैगन

टीएमआर वैगन डेयरी क्षेत्र की दैनिक गतिविधियों के सभी प्रकार के कार्यों के लिए सबसे उचित और उपयोगी उपकरण है। इस टोटल मिक्स राशन मशीन में वे सभी विशेषताएं और गुण हैं जो पशु चारे को सबसे बेहतर तरीके से मिलाते हैं। इस मशीन का ड्राबार और अधिकतम क्षमता 1500 किलोग्राम है। इसका वजन 1780 किलोग्राम है, और कुल वजन 3280 किलोग्राम है। टीएमआर एक्सल की क्षमता 5700 किलोग्राम है। इस टीएमआर मशीन को चलाने के लिए आवश्यक शक्ति 40 एचपी है। इसकी कीमत छोटे और सीमांत किसानों के लिए बहुत ही किफायती और बजट के अनुकूल है।

दूध की टंकियां

दूध और दूध से बने पदार्थों को प्री-स्टैक टैंकों, दूध टैंकों, अंतरिम टैंकों और मिक्सिंग टैंकों में एकत्रित किया जाता है ताकि उन्हें लंबे समय तक ताजा या फेश रखा जा सके।

चारा हार्वेस्टर

यह डेयरी फार्मों में हरे चारे की कटाई के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण है। इससे कपास, अरंडी आदि के डंठल साफ किया जा सकता है। इसके अलावा ये उपकरण नारियल के पत्तों, ताड़ के तेल के पत्तों, चाय के पौधे के अवशेषों को काटने के काम में भी लिया जा सकता है। इस उपकरण से कटाई करने का सबसे बड़ा लाभ ये है कि यह सूक्ष्म पोषक तत्वों को वापस मिट्टी में लाकर मिट्टी की जैविक साम्रगी में सुधार करता है।

बड़े डेयरी फॉर्मिंग में प्रयुक्त अन्य उपकरण

एक बड़े डेयरी फॉर्म में उपरोक्त उपकरणों के अलावा अन्य कई प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, इनमें ट्रैक्टर, लोडर ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, चारा ट्रक, चारा संघनन प्रेस, चारा ब्लॉक मशीनें, चारा भूसा कटर, फीड टोकरियां, फीड ग्राइंडर, टैंक, दूध के डिब्बे, मोटर चालित बोरवेल आदि हैं।

चना : उत्पादन तकनीकी अपनाकर, आमदनी बढ़ाएं

भूमि का चुनाव एवं तैयारी

चने की खेती के लिए हल्की दोमट तथा मटियार भूमि का चयन करें। मृदा का पी.एच. मान 6-7.5 उपयुक्त रहता है। गर्मी में जमीन की गहरी जुताई अवश्य करें, इससे कीड़ों के अंडे, घास फूस के बीज व भूमिजनित रोगों के बीजाणु अधिक तापक्रम होने के कारण मर जाते हैं। गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। अंतिम जुताई के पूर्व 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मैलाथियान घोल मिला दें, जिससे मिट्टी में पाये जाने वाले हानिकारक कीट नष्ट हो जाएं।

खेत पूर्व फसलों के अवशेषों से मुक्त हो इससे भूमिगत फफूंदों का विकास नहीं होगा। बुआई के लिए खेत को तैयार करते समय 2-3 जुताईयाँ कर खेत को समतल बनाने के लिए पाटा लगाएं। पाटा लगाने से नमी संरक्षित रहती है। खेत की मिट्टी बहुत ज्यादा महीन या भुरभुरी बनाने की आवश्यकता नहीं है इसके लिये ढेलेदार भूमि उपयुक्त होती है। जल निकासी की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें।

बुआई का समय

- बुआई समय पर करना खेती में सफलता की प्रथम सीढ़ी है।
- असिंचित क्षेत्रों में, खरीफ फसल की कटाई के तुरंत बाद या बारिश थमने के बाद ही अक्टूबर के द्वितीय एवं तृतीय सप्ताह तक बुआई करें।
- सिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के तृतीय सप्ताह से नवम्बर मह तक बुवाई करें।
- देर से बोने की स्थिति में जल्दी पकने वाली किस्मों का चयन कर दिसम्बर के द्वितीय सप्ताह तक बोनी करें।

धान की फसल कटने के बाद भी चना की खेती की जा सकती है। ऐसी स्थिति में बुआई दिसम्बर माह तक अवश्य कर दें।

बीज गुणवत्ता

- भौतिक गुणवत्ता वाले बीज का आकार, वजन और रंग एक समान हो। पत्थरों, मलबे और धूल, पत्ते, टहनियों, अन्य फसल के बीज, खरपतवारों और निष्क्रिय सामग्री से मुक्त हो।
- सिकुड़े हुए, रोगग्रस्त, धब्बेदार, क्षतिग्रस्त और खाली बीज नहीं हो।

बोने से पूर्व अंकुरण क्षमता की जांच स्वंय जरूर करें। बीज की अंकुरण क्षमता (85 प्रतिशत) तथा नमी (7-9 प्रतिशत) तक हो।

बीज दर

- खेत में पौधों की संख्या 33.44 पौधे/मीटर पर हो।
- उचित बीज दर दानों के आकार (भार), बीज अंकुरण, उत्तरजीविका प्रतिशत,बुआई का समय और भूमि की उर्वराशक्ति पर निर्भर करता है।
- छोटे दाने वाली किस्मों (100 दानों का वजन 15 से 17 ग्राम) की बीज दर 70-75 किलो ग्राम प्रति हेक्टर।
- मध्यम दाने किस्मों (100 दानों का वजन 18 से 22 ग्राम) की बीज दर 75-80 किलो ग्राम प्रति हेक्टर।
- काबुली किस्मों की बीज दर 100-120 किलो ग्राम प्रति हेक्टर।
- देर से बुआई की अवस्था में बीज दर 20 प्रतिशत बढ़ा दें।
- बीज परीक्षण में अंकुरण क्षमता (85.90 प्रतिशत) यदि कम हो, तो बीज दर बढ़ा दें।

बुआई की विधि

- देशी चना में पंक्तियों के बीच की दूरी 30 से.मी. तथा काबुली चना के बीच की दूरी 45 से.मी. हो।
- बुआई 6-8 से.मी. गहराई पर करें।
- पौध से पौध की दूरी 8-10 सेमी हो।

बीजोपचार

बीज उपचार एक विधि है, जिसमें पौधों को बीमारियों और कीटों से मुक्त रखने के लिए रसायन या जैव कीटनाशकों से उपचारित किया जाता हैं अथवा यह बीजों के ऊपर रसायनों या जैव कीटनाशकों को लगाने की प्रक्रिया है, जो बीज और पौध को बीज या मिट्टी ये होने वाली बीमारियों और पौधों के विकास को प्रभावित करने वाले कीटों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उकठा, शुष्क मूल विगलन व स्तम्भ मूल विगलन चना के भूमिजनित रोग है। भूमिजनित रोगों से चना फसल के बचाव हेतु बीजोपचार अवश्य करें।

चना में बीज उपचार:

- जीवाणु संवर्धन (राइजोबियम कल्चर) से बीजोपचार
- चना राइजोबियम कल्चर का प्रयोग करें।
- एक पैकेट राइजोबियम कल्चर (200 ग्राम) 40 किलो ग्राम बीज को उपचारित करने के लिय पर्याप्त है।
- बीजोपचार सायंकाल में करें, तेज धूप में बीजों के सूखने की संभावना रहती है तथा धूप में राइजोबियम जीवाणु मर जाते हैं।

पी.एस.बी. कल्चर

- फास्फेट घुलनशील बैक्टीरिया कल्चर 5 ग्राम/ किलो ग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।
- ध्यान रखें फफूंदनाशक दवा से पहले बीज उपचारित करें तत्पश्चात् राइजोबियम व पी.एस.बी कल्चर से उपचारित करें।

निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए बीज उपजार करें

- बीजों को समान रुप से उपचारित करें।
- उपचारित बीज को छाया में सुखाएं।
- उपचारित बीज उसी दिन बोयें।
- कीटनाशकों की समाप्ति तिथि देखें।

खाद व उर्वरक

उर्वरक की मात्रा मिट्टी की उर्वरता पर निर्भर करता है। अत: उर्वरकों की मात्रा मृदा परीक्षण के परिणामों के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए। खराब मिट्टी के मामले में फसल को अच्छी तरह से सड़ी फार्म यार्ड खाद और नाइट्रोजन (25 किग्रा./ हेक्टेयर), फॉस्फोरस और डायमोनियम फॉस्फेट (125 से 150 किग्रा./ हेक्टेयर) जैसे जैविक उर्वरकों की आवश्यकता होती है। खादों और उर्वरकों को बीज बोने से पहले डालें। इन उर्वरकों को मिट्टी में लगभग 8 सेमी. गहराई वाले ड्रिलर का उपयोग उर्वरक डालने के लिए करें।

- 15-20 किलो ग्राम नत्रजन, 40-50 किलो ग्राम फॉस्फोरस, 20 किलो ग्राम पोटाश व 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।
- नत्रजन, फास्फोरस और पोटाश की मात्रा बेसल खुराक के रुप में दी जाए।
- उपरोक्त मात्रा की पूर्ति 100 किलो ग्राम डी.ए.पी., 33 किलो ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश व 200 किलो ग्राम जिप्सम प्रति हेक्टर प्रयोग करने से प्राप्त की जा सकती है।
- जिन क्षेत्रों में जस्ते की कमी हो वहां 15-20 किलो ग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर बुआई के समय प्रयोग करें।
- देर से बुआई में नत्रजन 40 किलो ग्राम दें।
- असिंचित अवस्था में फूल आने पर 2 प्रतिशत यूरिया या डी.ए.पी. के घोल का पर्णीय छिड़काव, लाभकारी पाया गया है।

सिंचाई

चना ज्यादातर असिंचित दशा में की जाती है। हालांकि जहाँ सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो वहाँ एक सिंचाई,शाखायें बनते समय (फूल आने से पहले) अर्थात् बोने के 45 दिन बाद और दूसरी सिंचाई दाना भरने की अवस्था पर सिंचाई हल्की व स्प्रिंकलर द्वारा करें। फूल बनने की अवस्था में सिंचाई न करें इससे फूल झड़ते हैं। जिससे उपज में कमी आ जाती है।

म.प्र. के लिये चना प्रजातियाँ

देशी प्रजातियाँ:

जेजी 24, जेजी 31, जेजी 36, जेजी 130, जेजी 63, जाकी 9218, जेजी 14, जेजी 12, आरवीजी 204, आरवीजी 205

काबुली प्रजातियाँ:

जेजीके 1, जेजीके 5, आरवीकेजी 111, विराट, विहार

ककून उत्पादक किसानों को मिला अभी तक का अधिकतम दाम

प्रदेश का पहला ककून बाजार नर्मदापुरम जिले के मालाखेड़ी में हुआ शुरू

भोपाल : नर्मदापुरम जिले के मालाखेड़ी में ककून बाजार खुलने से किसानों को ककून के वाजिब दाम मिल रहे हैं। प्रदेश और बाहर के व्यापारी अब मालखेड़ी ओपन मार्केट से ककून की खरीदी कर रहे हैं। भुगतान भी तत्काल होने से कृषकों में बहुत उत्साह है। रेशम संचालनालय द्वारा नर्मदापुरम जिले के मालाखेड़ी में अक्टूबर 2022 से ककून मंडी शुरू की गई है। मंडी में किसान निरंतर अपने उत्पाद की बिक्री कर रहे हैं। रेशम कृषकों को ककून की सर्वाधिक दर 641 रुपये प्रति किलोग्राम प्राप्त हुई है।

राज्य सरकार द्वारा रेशम की खेती को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे, जिससे किसान आत्म-निर्भर बन सके और उन्हें इसका उचित दाम भी मिले। ओपन ककून मार्केट में बनखेड़ी, गुजरबाड़ा के रेशम कृषकों ने विक्रय प्रक्रिया में भाग लिया। ककून खरीदने के लिए मालदा, बैंगलुरू एवं स्थानीय बैतूल, इटारसी बनखेड़ी के व्यापारियों ने भाग लिया। प्राप्त उच्च दरों से रेशम कृषकों में हर्ष एवं उत्साह है। मध्यप्रदेश सिल्क फेडरेशन द्वारा पिछले कुछ वर्षों में ककून धागा एवं अन्य उत्पादों का विक्रय ऑफ लाइन किया जा रहा था। व्यापारियों एवं कृषकों की सुविधा के लिये खुली ककून मंडी की स्थापना 6 अक्टूबर 2022 को की गई।

महाराष्ट, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों से व्यापारियों द्वारा कृषकों से उत्पादित ककून सीधे मंडी से प्राप्त किया जा रहा है। इस पारदर्शी प्रक्रिया से रेशम उत्पादक कृषकों को उनके उत्पादों की गुणवत्ता के आधार पर अधिकतम मूल्य प्राप्त हो रहे हैं। कृषक गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के प्रति जागरूक और उत्साहित है। प्रमुख सचिव कुटीर एवं ग्रामोद्योग श्री मनु श्रीवास्तव द्वारा बाजार की सतत मॉनिटरिंग की जा रही है। इसके अलावा धागा एवं अन्य रेशम उत्पादों को भी ऑनलाइन ई-आक्शन प्रक्रिया से विक्रय किये जाने के उददेश्य से ऑनलाइन टेंडर किये जा रहे हैं। अन्य उत्पादों का उचित मूल्य मिलने से अनेक कृषकों द्वारा रेशम विभाग की योजनाओं को अपनाने हेतु लगातार संपर्क किया जा रहा है। इससे भविष्य में क्षेत्र में रेशम क्लस्टर विकसित होने की संभावना भी बढ़ रही है।

जबलपुर में बनेगा ककून मार्केट

रेशम संचालनालय द्वारा ककून उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए जबलपुर जिले में मार्केट भी बनाया जाएगा। इससे नरसिंहपुर, शहडोल, मंडला, बालाघाट सहित अन्य क्षेत्रों में उत्पादित ककून को विक्रय के लिए ककून मंडी में लाया जा सकेगा।

म.प्र. राज्य सहकारी संघ मर्यादित भोपाल की ओर से प्रकाशक, मुद्रक गणेश प्रसाद मांझी द्वारा मध्यप्रदेश राज्य सहकारी मुद्रणालय परिमित, भोपाल से मुद्रित एवं ई-8/77, शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित। प्रबंध सम्पादक : ऋतुराज रंजन, संपादक : गणेश प्रसाद मांझी
डॉक पंजीयन क्रमांक : म.प्र./भोपाल/357/2021-23 मुद्रित पत्र रजि. नं./आर.एन./13063/1967, फोन : 2926159, 2926160, इस अंक में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं जिनमें संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।